

भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
लोक सभा

अतारंकित प्रश्न संख्या 3499

बुधवार, 22 मार्च, 2023 को उत्तर दिए जाने के लिए

भूकंप संभावित क्षेत्र

†3499. डॉ. एम.पी. अब्दुस्समद समदानी:

क्या पृथ्वी विज्ञान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या सरकार के पास तुर्की में भूकंप की हाल की घटनाओं पर विचार करते हुए भारत के भूकंप संभावित क्षेत्रों की पहचान करने और भूकंपीय क्षेत्रों का पुनर्मूल्यांकन करने की कोई योजना है;
- (ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
- (ग) क्या सरकार के पास भूकंप की भविष्यवाणी के लिए कोई नवोन्मेषी तकनीक है; और
- (घ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

(डॉ. जितेंद्र सिंह)

(क) और (ख) पूरे देश को पहले से ही चार भूकंपीय क्षेत्रों अर्थात् जोन V (भूकंपीय रूप से अधिकतम सक्रिय), IV, III और II (भूकंपीय रूप से न्यूनतम सक्रिय) में विभाजित किया गया है। भारत का कुल ~59% भू क्षेत्र (भारत के सभी राज्यों को शामिल करते हुए) अलग-अलग कंपन तीव्रता वाले भूकंपों के लिए संवेदनशील हैं। देश के भूकंपीय क्षेत्रीकरण मानचित्र के अनुसार, देश का ~ 11% क्षेत्र जोन V में, ~ 18% क्षेत्र जोन IV में, ~ 30% क्षेत्र जोन III में और शेष क्षेत्र जोन II में आता है।

तुर्की भूकंप की हाल की घटनाओं के संदर्भ में, यह उल्लेखीय है कि हिमालयी बेल्ट को भूकंपीय रूप से दुनिया के सबसे सक्रिय अंतर-महाद्वीपीय क्षेत्रों में से एक माना जाता है। इस क्षेत्र ने अपनी लगभग 2400 किमी लंबी पट्टी के समानांतर अनेक मध्यम से उच्च तीव्रता के भूकंप देखे हैं। इस क्षेत्र में भूकंपीयता मुख्य रूप से प्रमुख हिमालयी श्रस्ट के कारण है जिसके साथ हिमालयी वेज के नीचे भारतीय प्लेट पर जोर पड़ता है। इस क्षेत्र में प्रमुख भूकंप 1897 शिलांग पठार (तीव्रता 8.1), 1905 कांगड़ा (तीव्रता: 7.8), 1934 बिहार-नेपाल सीमा (तीव्रता: 8.3), अरुणाचल-चीन सीमा 1950 (तीव्रता: 8.5), 2015 नेपाल (तीव्रता: 7.9)) हैं, जो हिमालय क्षेत्र में तनाव संचय की प्रक्रिया को दर्शाता है।

(ग) और (घ) आज की तारीख तक, दुनिया में कहीं भी, स्थान, समय और परिमाण में युक्तिसंगत सटीकता के साथ भूकंप की घटना का पूर्वानुमान करने के लिए कोई सिद्ध वैज्ञानिक तकनीक उपलब्ध नहीं है। राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केन्द्र देश में और उसके आसपास आने वाले भूकंपों का पता लगाने के लिए एक देशव्यापी राष्ट्रीय भूकंपीय नेटवर्क का रखरखाव करता है। भूकंप आने के बाद भूकंप के मापदंडों को राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण सहित सभी संबंधित हितधारकों को प्रसारित किया जाता है। इसके अलावा, सृजित डेटा को भूकंप विज्ञान के विभिन्न पहलुओं पर अनुसंधान एवं विकास के लिए उपयोग करने के लिए साझा किया जा रहा है।
